IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों का अध्ययन

डॉ० हरेन्द्र कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, महाराजा सूरजमल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, भरतपुर (राज०)

सारांश

इस अद्भुत संसार मे ईश्वर ने अनेक प्रकार की सुंदर–सुंदर वस्तुओं का निर्माण कर मनुष्य को इसके रहस्य तथा जीवन के प्रति जिज्ञासु बना दिया है। उससे भी आश्चर्य एवं जिज्ञासा की बात यह है कि संसार के सभी प्राणी विचार तथा दर्शन के संदर्भ मे अनेकता लिए हुए हैं। इस विभिन्नता मे कुछ ऐसे प्राणी भी जन्म लेते हैं, जो दूसरों के लिए जन्म लेते हैं और समाज सेवा के लिए स्वयं को अर्पण कर अपने को धन्य करते हैं और उनसे भी भाग्यशाली वे हैं, जो ऐसे सत्पुरुषों के वचनों तथा विचारों को हृदयंगम कर उनकी धारा में बहते हैं। ऐसे महान पुरुष हमारी वसुंधरा की गोद मे पले –बढ़े और संसार के मार्गदर्शन के लिए उन्होंने सम्पूर्ण जीवन–दर्शन को त्याग और तपस्या मे लगा दिया।

उनके सदविचारों तथा शिक्षा के उपदेशों ने सम्पूर्ण विश्व को अकल्पनीय, अपरिमित योगदान दिया है। ऐसे विचारशील तथा गुणवान महापुरुषों ने संसार की दिशा को ही बदल दिया, अन्यथा आज के वातावरण का स्वरूप कुछ और ही होता। ऐसे शिक्षाशास्त्रियों मे महात्मा गांधी, गिजूभाई, स्वामी विवेकानंद, अरविन्द घोष आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्हो ने समय चक्र के अनुसार सत्संगति देकर सम्पूर्ण विश्व को आनंद की अनुभूति प्रदान की।

शब्द कुंजी:

जीवन परिचय, शैक्षिक दर्शन, शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन, स्वामी विवेकानंद जी का सामाजिक चिंतन, स्वामी जी के आध्यात्मिक एवं दार्शनिक पक्ष।

स्वामी जी जीवन का परिचय:

संतों, वीरों एवं साहित्यकारों की भूमि बंगाल से दर्शन, धर्म एवं संस्कृति की पावन त्रिवेणी प्रवाहित करने वाले स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 मे प्रसिद्ध वकील श्री विश्वनाथ दत्त के यहाँ हुआ था। नामकरण के समय उनका नाम नरेंद्रनाथ रखा गया। बचपन में नरेंद्रनाथ बहुत चंचल थे। नरेंद्रनाथ की स्मरणशक्ति अत्यंत प्रखर थी। नरेंद्रनाथ ने अंग्रेजी तथा बांग्ला का अच्छा अध्ययन किया। विद्यार्थी जीवन मे वे अपने व्यक्तित्व के कारण सबके प्रिय बन गये। नरेंद्रनाथ जब रामकृष्ण परमहंस से मिले तो उनसे प्रभावित हुए। निरंतर 6 वर्ष तक उनके संपर्क मे रहने के कारण नरेंद्रनाथ मे चिंतन के नए द्वार खुले और शनैः शनैः अपनी

साधना, तपस्या, चिंतन एवं अध्ययन से नरेंद्रनाथ स्वामी विवेकानंद बन गये। सन् 1886 ई० में स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी का निधन हो गया। स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु की स्मृति में रामकृष्णमिशन स्थापित किया तथा उनके द्वारा दिए गये वेदान्त के उपदेशों को एशिया, यूरोप तथा अमेरिका की जनता में आजीवन प्रचार किया। स्वामी जी ने पाश्चात्य देशों में भावात्मक तथा भारत मे क्रियात्मक वेदान्त का प्रचार करके हिन्दू धर्म की महानता को फैलाया।

अध्ययन के उद्देश्यः

1. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
2. स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचारों का अध्ययन ।

परिकल्पनाः

1. स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का सकारात्मक पक्ष का अध्ययन।
2. स्वामी जी ने दार्शनिक विचारों के द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ावा दिया।

शोध विधिः

इस अध्ययन में विवेकनंद जी दर्शन संबंधी विचारों की समीक्षा की गयी है किसी भी शिक्षा शास्त्री के विचारों पर उसके जीवन की घटनाओ एवं परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता हैं अतः स्वामी विवेकानंद जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं एवं उनके कार्यों का सबसे पहले विश्लेषण किया गया हैं। दर्शन संबंधित विचारों को अध्ययन करने की विधि ऐतिहासिक विधि हैं जिसमे इतिहास की पद्धति अपनायी जाती हैं। इस पद्धति मे व्यक्ति के जीवन की प्रमुख घटनाओं को देखा जाता हैं और इन घटनाओं के पारस्परिक संबंधी का विश्लेषण किया जाता हैं।

अध्ययन का परिसीमनः

अध्ययन को स्वामी जी शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों तक सीमित कर दिया गया है।

शैक्षिक दर्शनः

प्रत्येक चिंतक का दर्शन चाहे वह संस्कृति को लेकर हो, धर्म से संबंधित हो, राजनीति से संबंधित हो, अर्थशास्त्र से संबंधित या शिक्षा से, वह उसके अपने जीवन–दर्शन पर आधारित होता हैं। स्वामी विवेकानंद का भी अपने जीवन का दर्शन था। उनके विचार से जीवन मे संघर्ष का बड़ा महत्व पूर्ण स्थान है। व्यक्ति को पग–पग पर संघर्ष करना पड़ता है। यदि संघर्ष मे सफलता प्राप्त करनी है तो व्यक्ति को तन–मन से बलवान होना चाहिए। स्वामी जी ने देश की दुर्दशा देखी तो उनका हृदय बहुत दुखी हुआ। अपने ही देश मे अपने ही देशवासी कायर, असहाय एवं मौन बैठे विदेशियो ं द्वारा किए गये हर प्रकार के अत्याचार को सहन कर रहे हैं । भय व्यक्ति को सम्मान के साथ जीवित नही रहने देता। भयभीत व्यक्ति पल–पल मरता है। अतः डरो मत, आलस्य एवं निद्रा मे वक्त मत गँवाओ, उठो, जागो और खड़े हो जाओ। स्वामी विवेकानंद ऐसी शिक्षा प्रणाली को इस देश के लिए उपयुक्त समझते थे, जो व्यक्ति को जीवन मे आने वाले संघर्ष के लिए तैयार करे उसे इस योग्य बनाए कि वह चुनौतियो ं का डटकर सामना कर सके।

स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकनः

स्वामी विवेकानंद जी की नस–नस में भारतीयता तथा आध्यात्मिकता कूट–कूट कर भरी हुई थी अतः उनके शिक्षा दर्शन का आधार भी भारतीय वेदान्त तथा उपनिषद ही रहे। वे कहते हैं कि प्रत्येक प्राणी मे आत्मा विराजमान हैं। इस आत्मा को पहचानना ही धर्म है। स्वामी विवेकानंद का अटल विश्वास था कि सभी प्रकार का सामान्य तथा आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य के मन में हैं। अभी तक इसकी खोज नहीं हो पाई है। यह ढका ही रह जाता है। अर्थात स्वामी जी के अनुसार कोई व्यक्ति किसी दूसरे को नहीं सिखाता। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप स्वयं ही सीखता हैं।

बाहरी शिक्षक तो केवल सुझाव ही प्रस्तुत करता हैं जिससे भीतरी शिक्षक को समझने और सीखने के लिए प्रेरणा मिल जाती है। इसी दृष्टि से स्वामी जी ने अपने समय की शिक्षा को निषेधात्मक बताया तथा लोगों से कहा– "आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षायें पास कर ली हो तथा अच्छे भाषण दें सकता हो। पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जन –साधारण को जीवन–संघर्ष के लिए तैयार नहीं कर सकती, जो चरित्र निर्माण नहीं कर सकती, जो समाज सेवा की भावना को विकसित नहीं कर सकती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ हैं।" उन्होंने कहा हमें उस शिक्षा की आवश्यकता हैं जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता हैं, मस्तिष्क की शक्ति में वृद्धि होती है, बुद्धि विकसित होती है जिसको प्राप्त करके व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। इस प्रकार शिक्षा आत्म–विकास की प्रक्रिया हैं। बालक स्वयं अपने आप को शिक्षित करता हैं।

स्वामी विवेकानंद जी का सामाजिक चिंतनः

एक बार विवेकानंद जी ने घोषणा की थी "मैं सामाजवादी हूँ, इसलिए नहीं कि मैं इसे पूर्ण रूप से निर्दोष व्यवस्था समझता हूँ, बल्कि इसलिए कि कुछ नहीं से आधी रोटी अच्छी है।" इनकी रचनाओं मे सामाजिक समानता का जो समर्थन देखने को मिलता है वह पुरातनवाद तथा ब्राह्मणो की स्मृतियों मे व्याप्त सामाजिक ऊँच–नीच के सिद्धांत का प्रबल प्रतिवाद है। स्वामी जी ने स्वयं अपनी आंखों से भारत भ्रमण के समय भयानक निर्धनता एवं अज्ञानता के कारण देशवासीओ ं को पशुवत जीवन व्यतीत करते हुए देखा है।

विवेकानंद के शब्दों मे, "जिस तरह आप एक पौधा नहीं उगा सकते, उसी तरह आप किसी बालक को शिक्षा नहीं दे सकते। पौधा स्वयं अपनी प्रकृति को विकसित करता है।," परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि शिक्षा में शिक्षक की आवश्यकता नहीं हैं या महत्व नहीं है, शिक्षा की प्रक्रिया मे शिक्षक का महत्व बालक के आत्म–विकास के मार्ग की बाधाओं को दूर करने मे है। अस्तु शिक्षक का कार्य यह हैं कि वह बालक–बालिकाओ ं को अपने हाथ पैरों, इंद्रियों और बुद्धि आदि के प्रयोग के लिए प्रेरित करें। आधुनिक काल मे शिशु की सभी विधियाँ इस विचार को समर्थन करती हैं। स्पष्ट है कि विवेकानंद शिक्षा मे किसी प्रकार का बाहरी दवाव नहीं चाहत, क्योंकि इसमे बालकों की स्वतंत्रता मे व्यवधान पहुँचता है। वास्तविक सुधार अंदर से होता है, बाहरी दवाब से उल्टी प्रक्रियाएं होती हैं और अनुशासनहीनता तथा उदंडता उत्पन्न होती है। स्वतंत्रता, प्रेम और सहानुभूति के परिवेश मे बालक साहस और आत्मविकास करना सीखेगा, अन्यथा वह दब्बू और भीरु बन जायेगा। विवेकानंद के शब्दों में, "यदि आप किसी को शेर नही बनने देते तो वह लोमड़ी बन जायेगा।" इस प्रकार शिक्षा में बालक की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन किया जाना चाहिए। प्रत्येक बालक को उसकी सामर्थ्य के अनुसार विकसित होने

का अवसर दिया जाना चाहिए। कोई भी बालक चाहे वो कितना ही पिछड़ा हुआ क्यों न हो, उसे आगे बढ़ने का अधिकार है। विवेकानंद ने शिक्षा मे धार्मिक और आध्यात्मिक तत्व पर जोर दिया है।

स्वामी जी के आध्यात्मिक/दार्शनिक पक्षः

भारत के संतों की परंपरा मे उनका अद्वितीय स्थान हैं और देश के बाहर जो उनको ख्याति मिली है उसका उदाहरण दूसरा नहीं है। स्वामीजी के अनुसार, "धर्म शिक्षा का अंतिम आधार हैं। मेरा तात्पर्य धर्म के बारे में मेरी अपनी या किसी अन्य की राय से नहीं है।" उन्होंने तो यह तक कह दिया है कि विभिन्न विज्ञानों के शिक्षण के साथ–साथ और उन्ही के माध्यम से धर्म की शिक्षा भी दी जा सकती है। उनके अपने शब्दों में," आधुनिक विज्ञान की सहायता से उनके ज्ञान को जगाइये। उनको इतिहास, भूगोल, विज्ञान और साहित्य की शिक्षा दीजिए और इनके साथ–साथ इनके माध्यम से धर्म के महान सत्य बताइये। हिन्दू जीवन की पद्धति आज प्रायः लुप्त होती जा रही है, हमारे विद्यालय ही उसे बचा सकते है। स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका मे विश्व धर्म सम्मेलन हेतु 5 मिनट चाहे थे और 1 मिनट मे एक वाक्य कहा। स्वामी विवेकानंद ने कहा– "हमारी भारतीय संस्कृति, हमारा भारतीय दर्शन उस बिन्दु से प्रारंभ होता है, जहाँ सारे संसार की संस्कृतियाँ और दर्शन समाप्त हो जाते हैं। जहाँ तुम अंधेरे में भटकने लगते हो, वहाँ हिन्दू धर्म तुम्हें ज्ञान की मशाल दिखाने के लिए सर्च लाइट लेकर आता हैं। यही हिन्दू धर्म की विशेषता हैं।"

भारत आज भी विश्व का इस क्षेत्र में मार्ग–दर्शन कर रहा है। आगे आने वाले समय में भारतीय आध्यात्मिक विचारधारा से सारी पृथ्वी आवृत्त होकर दिव्य भाव से अभिभूत हो सकेगी। उनकी शिक्षा प्रणाली भारत की दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपरा के अनुरूप थी। वे स्वदेशी के जबरदस्त हिमायती थे और जहाँ उन्हो ने पाश्चात्य विज्ञान अपनाने के लिए कहा वहीं उन्होंने दूसरी ओर भारत ब्रह्मचर्य और अध्यात्म के प्राचीन आदर्शों को शिक्षा में सबसे प्रमुख स्थान दिया। वे अंग्रेजी और पाश्चात्य संस्कृति के विरुद्ध नहीं थे। यदि ऐसा होता तो पश्चिम में उनका इतना जोरदार स्वागत न होता। महान आदर्शवादी होते हुए भी उनके शिक्षा संबंधी विचार अत्यधिक व्यावहारिक और यथार्थवादी हैं। उनके शिक्षा–संबंधी विचार आज भी समकालीन शिक्षा प्रणाली के सुधार के लिए मार्ग–निर्देशक का कार्य कर सकते हैं।

निष्कर्षः

इक्कीसवी शताब्दी के बदलते परिवेश में जहां सूचना और प्रद्योगिकी का युग चल रहा है ऐसे में स्वामी जी के चिंतन को अपनाना आवश्यक हैं। स्वामी जी शिक्षा के वर्तमान रूप को अभावात्मक बताते थे। स्वामी विवेकानंद भारतीयों के लिए पाश्चात्य दृष्टिकोण से प्रभावित शिक्षा पद्धति के स्थान पर भारतीय गुरुकुल पद्धति को अपनाने के पक्ष मे थे जिसमें विद्यार्थियों और शिक्षाको मे निकटता के संबंध के साथ श्रद्धा, पवित्रता ज्ञान, धैर्य, विश्वास, विनम्रता, आदर आदि सद्‌गुणों का समावेश हुआ करता था। वर्तमान शिक्षा में इन् सभी सद्‌गुणो ं का समावेश अत्यंत आवश्यक है उसी से वर्तमान युवा पीढ़ी को सटीक मार्ग दर्शन संभव हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथः

1. तिवारी उमेश (एन. डी.) – प्रगतिशील भारत मे शिक्षा ,आगरा ,ज्योति प्रकाशन।
2. गोयल डॉव राजकुमार और अग्रवाल डॉव मीरा –शिक्षा दर्शन और आत्म–विकास की अवधरणाएं, आर. लाल बुक डिपो मेरठ।
3. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप, 2009 शिक्षा दर्शन एवं पाश्चात्य तथा भारतीय शिक्षाशास्त्री, आर. लाल. बुक डिपो मेरठ।
4. पचौरी प्रोव गिरीश – समकालीन भारत और शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो।
5. माथुर डॉ. एस. एस. – शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. पाठक, पी. डी. और त्यागी जी. एस. डी. – शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. बिहारी, प्रो. रमन लाल एवं तोमर गजेन्द्र सिंह – विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।